

हज़रत अली



अहमद नदीम नदवी

हज़रत अली رضي الله عنه



अहमद नदीम नदवी



www.idaraimpex.com

हज़रत अली

लेखक
अहमद नदीम नदवी

Hazrat Ali (Raz)



प्रकाशन : 2016

ISBN: 81-7101-508-5

TP-469-16

Published by Mohammad Yunus for
IDARA IMPEX
D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **sales@idara.co**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
लड़कपन और जवानी	4
ख़लीफ़ा बनने से पहले	6
ख़लीफ़ा बनने के बाद	8
जुमल की लड़ाई	16
राजधानी बदली गई	18
सिफ़्फ़ीन की लड़ाई	21
ख़ारजियों से लड़ना पड़ा	24
मिस्र में विद्रोह	27
ख़ैरात का विद्रोह	29
हज़रज अली रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या	32
एक आदर्श जीवन	35

लड़कपन और जवानी

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के शहीद कर दिए जाने के बाद ख़लीफ़ा बनाए गए। यह इस्लामी राज्य के चौथे ख़लीफ़ा थे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अबू तालिब के बेटे और अल्लाह के रसूल सल्ल० के चचरे भाई थे। चूंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बचपन ही से अबू तालिब के घर पले-बढ़े, इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अली रज़ियल्लाहु अन्हु का साथ शुरू ही से रहा। दोनों में एक दूसरे के लिए अत्यधिक प्रेम-भाव था।

हज़रत मुहम्मदं सल्ल0 जब पैग़म्बर बनाये गए तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मात्र दस साल के एक लड़के थे। आप उन आरंभ के दस लोगों में से हैं जिन्होंने प्यारे नबी सल्ल0 के पैग़म्बर बनने का एलान करते ही उन पर ईमान लाने का श्रेय प्राप्त किया। उसी समय की घटना है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार अपने कुछ नातेदारों को खाने पर निमंत्रित किया। खाने के बाद प्यारे नबी ने इस्लाम का आह्वान किया और इसके बाद तीन बार पूछा कि मौजूद लोगों में से कौन मुझ पर और अल्लाह पर ईमान लाएगा। सब लोग चुप रहे, लेकिन तीनों बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े होकर कहा—

'मैं आप पर और अल्लाह पर सच्चे दिल से ईमान लाता हूं।'

उस समय ईमान लाने का अर्थ था परीक्षा से गुज़रना, विपत्तियों और कष्टों का शिकार होना, अत्याचार का सहन करना और परेशान होना। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी इन परिस्थितियों से गुज़रने लगे, इन आज़माइशों और परेशानियों से गुज़रने के बावजूद आप अपने मिशन पर जमे रहे और सत्य पर अडिग रहने और सत्य सन्देश सभी तक पहुंचाने में आगे बढ़ कर काम करते रहे।

जब विरोध चरम सीमा को पहुंच गया और प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम का वहां चलना-फिरना, रहना-सहना दूभर हो गया तो आपने वहां से हिजरत (देश-परित्याग) का निर्णय कर लिया। जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से हिजरत करके मदीना चले आए तो यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ही थे जिनके सुपुर्द आप अपना पूरा सामान कर गए। उन सामानों में दूसरों की अमानतें भी बहुत थीं। वे सब उनको दे गए और ताकीद कर गए कि जिसकी जो अमानत है, उस तक पहुंचा दें। उस समय आप की उम्र 23 साल थी। फिर सन् 02 हि0 में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का विवाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से किया, उस समय हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र 25 साल थी और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र लगभग 19 साल थी। विवाह का ख़र्च पूरा करने और मह्र अदा करने के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना ऊंट, अपनी ढाल और कुछ दूसरे सामान चार सौ अस्सी दिरहम में बेच दिये। हज़रत फ़ातिमा से हज़रत अली के तीन बेटे हज़रत हसन, हज़रत हुसैन, हज़रत मुह्सिन रज़ियल्लाहु अन्हुम पैदा हुए, इसी तरह आपकी बेटियां ज़ैनब और उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी पैदा हुईं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने लड़कपन ही में इस्लाम ग्रहण कर लिया था। आप बड़े निडर, वीर और उत्साही व्यक्ति थे, आपका पूरा जीवन इस पर गवाह है। सत्य अपनाने में आपने कभी किसी प्रकार का कोई संकोच नहीं किया।

आपकी वीरता जग-प्रसिद्ध थी। एक बार सन् 05 हि० में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक लड़ाई में प्रसिद्ध पहलवान उमर बिन अबीदूद के मुक़ाबले में निकले। उमर को अपनी शक्ति और वीरता पर बड़ा गर्व था, वह इन्हें अपने मुक़ाबले में देखकर, तुच्छ समझकर मुस्कराया और कहा, जा, मेरे मुक़ाबले से चला जा, मुझे तुझ पर दया आती है, इसलिए कि मैं तेरी हत्या नहीं करना चाहता।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने निःसंकोच भाव से कहा, लेकिन मैं तुम्हारी हत्या करना चाहता हूं और मुझे इस काम को करने में तनिक भी संकोच नहीं। फिर आपने कुछ ही वारों में उस नामी पहलवान को ऐसा आड़े हाथों लिया कि उसका काम ही तमाम कर दिया। इसी तरह ख़ैबर की लड़ाई में आपने उच्च्च कोटि की वीरता का प्रदर्शन किया।

हुदैबिया-समझौते के मौक़े पर आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। समझौता करते समय जब संधि पत्र तैयार होने लगा तो हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम के बाद शब्द 'रसूलुल्लाह' भी लिख दिया गया, इस पर विपक्ष ने आपत्ति की और कहा, हम तो उन्हें रसूल मानते ही नहीं, हम तो उनको मात्र मुहम्मद ही जानते हैं। प्यारे नबी शब्द को हटा देने पर तैयार हो गए, मगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने हाथों से उसे काटने से इंकार कर दिया और स्पष्ट शब्दों में कहा, मेरे हाथों ऐसा नहीं हो सकता।

ख़लीफ़ा बनने से पहले

मक्का-विजय के अवसर पर प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस हज़ार सेना के साथ मक्का में दाख़िल हुए। उस समय झंडा हज़रत साद बिन उबैदा के हाथ में था। वह ज़ोर-ज़ोर से नारे लगा रहे थे, आज मक्का में जीत का दिन है, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सुना तो बहुत नाराज़ हुए और फ़रमाया, 'आज किसी से कोई पूछ-गछ नहीं की जाएगी।' आपने झंडा साद से लेकर हज़रत अली के सुपुर्द कर दिया।

हुनैन की लड़ाई के अवसर पर शत्रु के वाणों की वर्षा सहन न कर पाने के कारण इस्लामी सेनाएं पीछे हटने लगीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी जगह पर क़ायम रहे और वीरतापूर्वक मुक़ाबला करते रहे।

तबूक की लड़ाई एक ऐसी लड़ाई है, जिसमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु शामिल न हुए थे, इसलिए कि कुछ आवश्यक आवश्यकताओं के कारण प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपको मना कर दिया था। ऐसा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश के पालन में आपने किया था। इसीलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था, 'तुम मेरे लिए हारून हो, अलावा इसके कि मेरे बाद कोई नबी नहीं।'

तबूक की लड़ाई के बाद प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक पार्टी को हज के लिए मक्का रवाना फ़रमाया। दल के नेता हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु थे। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ध्यान आया कि आशंका है मक्का वासी मुसलमानों के प्रति शत्रु-भाव दिखाएं। आपने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दूत के रूप में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेजा और कहलाया कि वह सावधान रहें, साथ ही हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को ताकीद की कि वह किसी स्थिति में भी विरोधियों से

लड़ाई न करें, जब तक कि शत्रु उन पर आक्रमण न बोल दें। यह नीति बड़ी सफल रही। क़बीला हमदान ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वजह से एक ही दिन में इस्लाम स्वीकार कर लिया।

विदाई हज की वापसी के बाद प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बीमार पड़ गए। हज़रत अली ने ध्यानपूर्वक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की देखभाल की। एक दिन हज़रत अब्बास ने हज़रत अली से कहा कि आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निवेदन करें कि वह अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह गुस्ताख़ी है और मैं ऐसा कभी न करूंगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहावसान के बाद जब उत्तराधिकारी की समस्या हल करने में वरिष्ठ सहाबी लगे रहे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़फ़न-दफ़न की व्यवस्था हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के ही सुपुर्द कर दी गई थी।

प्यारे नबी के देहावसान के बाद जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लामी राज्य के पहले ख़लीफ़ा नियुक्त हुए तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु छः महीने बैअत[1] करने से रुके रहे। इसकी वजह शायद यही थी कि पहले ख़लीफ़ा से हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने हिस्से की मांग की थी। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके इस आवेदन को इसलिए रद्द कर दिया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने लिए कोई जायदाद न छोड़ी थी, इसलिए हिस्से का प्रश्न ही नहीं पैदा होता। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़िदक बाग़ अपने जीवन ही में मुसलमानों के लिए वक़्फ़ कर दिया था। वक़्फ़ जायदाद में किसी व्यक्ति का अकेले का हिस्सा नहीं हो सकता। इस पर हज़रत फ़ातिमा एक इंसान होने के नाते नाराज़ हो गईं और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी भावनाओं को देखते हुए छः माह तक बैअत नहीं की। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के देहावसान के बाद आपने बैअत कर ली और फिर बढ़-चढ़ कर राज-काज में हिस्सा लेने लगे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के देहावसान के बाद आपने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से न केवल यह कि बैअत की, बल्कि अपनी एक-बेटी का विवाह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दिया।

---

1. बैअत वचन देने और स्वीकार करने को कहते हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बात के लिए छः आदमियों को नामांकित किया था कि इनमें से किसी एक को ख़लीफ़ा चुन लिया जाए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी उनमें से एक थे। जब आम राय ने हज़रत उस्मान के हक़ में फ़ैसला किया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मुबारकबाद दी और तुरन्त ही उनकी बैअत कर ली।

फिर वह समय भी आया जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद कर दिए गए। हत्यारे अपनी जगह पर भले ही लज्जित रहे हों, हज़रत उस्मान के नातेदार-रिश्तेदार बहुत दुखी थे और इसी हाल में वे मक्का चले गए, अलबत्ता एक व्यक्ति हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी की कटी हुई उंगलियों को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ून से लत-पथ कुरते में लपेट कर दमिश्क़ पहुंचा और उन्हें अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने पेश करके ख़ूब रोया। पांच दिन तक मदीने की गलियों में आतंक छाया रहा। छठे दिन नए ख़लीफ़ा के चुने जाने की आवाज़ उठी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा चुन लिए गए।

ख़लीफ़ा बनने के बाद

सबसे पहला जो काम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़लीफ़ा बनने के बाद किया, वह था प्रान्तों के गवर्नरों की नयी नियुक्ति। हज़रत मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमीरुल मोमिनीन को बड़ी अच्छी राय दी थी कि वे अभी इस काम को स्थगित रखें। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस राय का समर्थन किया और सराहा। इन लोगों ने ख़लीफ़ा को स्पष्ट शब्दों में कहा कि इस अशान्ति की स्थिति में, जब तक पूरा देश आप की बैअत न कर ले, किसी गवर्नर को हटाना बुद्धिमत्ता न होगी, फिर यह कि अमीर मुआविया की नियुक्ति हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने की थी, उनका प्रभाव शाम में बहुत है, इसलिए उनका हटाया जाना अशुभ ही होगा।

अमीरुल मोमिनीन ने बड़े शान्त भाव से उत्तर दिया, मैं अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को एक दिन के लिए भी गवर्नर नहीं रहने दूंगा।

उन लोगों ने फिर समझाते हुए कहा, अगर आपने अमीर मुआविया को हटा दिया तो शाम के लोग आपके ख़लीफ़ा बनाए जाने पर आपत्ति करेंगे और साथ ही यह भी कहेंगे कि आपने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों को सज़ा

देने में ढील दी है। संभव है कि वे राई का पहाड़ बना कर मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाएं। हां, इसकी पूरी संभावना है कि अगर अमीर मुआविया अपनी जगह पर बने रहे तो आशा है कोई आप पर उंगली न उठाएगा और आप अच्छे वातावरण में अपने राज्य को सुदृढ़ बनाने में सफल हो जाएंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी राय पर आग्रह था।

उन लोगों ने कहा कि शान्ति स्थापित हो जाने के बाद अमीर मुआविया का हटाया जाना एक सरल कार्य होगा, पर हज़रत अली ने कहा, मैं उसका मुक़ाबला करने के लिए हर समय तैयार हूं। समझाने वालों में हज़रत मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हु और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे, लेकिन हज़रत अली ने किसी की न मानी और अपनी राय पर अड़े रहे।

फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने गवर्नरों को हटाये जाने का आदेश दे दिया। दुर्भाग्य कि नए गवर्नर चार्ज लेने पहुंचे, तो उनके साथ अच्छा व्यवहार न हुआ। हर जगह यही मांग की गई कि पहले हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या का बदला लिया जाए, मिस्र में भी, जो कि विद्रोहियों का अड्डा था, बदला लेने पर लोग तुले हुए थे। जब यमन के पुराने गवर्नर को मालूम हुआ कि उसके स्थान पर नये गवर्नर की नियुक्ति हो चुकी है, तो वह तमाम ख़ज़ाना (राजकोष) लेकर मदीना चला गया, क़ैस जो मिस्र का गवर्नर नियुक्त किया गया था, उसे भी यह कहना पड़ा कि वह हज़रत उस्मान का बदला ही लेने आया है। कूफ़ा और शाम के नए गवर्नरों के लिए कोई रास्ता न था कि अपनी जानें बचा कर भाग जाएं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने वरिष्ठ नेताओं हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को मश्विरे के लिए बुलाया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, दंगे की आग फैल रही है और क़रीब है कि पूरे अरब को जला कर रख दे। बेहतर था कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या का बदला तुरन्त हत्यारों से लेते, मगर, जब ऐसा नहीं हुआ तो अब आप हमें एक भारी सेना देकर क़ातिलों का बदला लेने के लिए भेज दें, विद्रोह की आग अपने आप ठंडी हो जाएगी, पर अमीरुल मोमिनीन ने कहा, अभी कुछ देर हमें और देखना चाहिए। उन्होंने दो पत्र एक अमीर मुआविया के नाम और दूसरा अबू मूसा गवर्नर कूफ़ा के नाम तुरन्त भेज दिए। अबू मूसा ने तो आज्ञापालन के लिए अपना सर झुका दिया, पर अमीर मुआविया ने कोई उत्तर न दिया।

स्थिति यह बन गई कि दमिश्क़ की मस्जिद के आंगन में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ून से लथ-पथ कुरता एक डंडे पर लटका रखा था, उनकी

पत्नी की कटी हुई उंगलियां मस्जिद के आंगन में पड़ी थीं। इन चीज़ों को देख-देख कर लोगों की बेचैनी बढ़ रही थी। हत्यारों से बदला लेने की आवाज़ तेज़ हो रही थी और समय के ख़लीफ़ा से बार-बार मांग हो रही थी कि हत्यारों से तुरन्त बदला लिया जाए।

वह दूत, जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का पत्र अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम लाया था, दमिश्क़ में उत्तर की प्रतिक्षा कर रहा था। वह हर दिन याद दिलाता, आख़िर कुछ समय बीत जाने के बाद अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक सादा क़ागज, जिस पर कुछ न लिखा था, लिफ़ाफ़े में बन्द करके अपने आदमी के हाथ उस दूत के साथ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में भेजा। अमीरुल मोमिनीन सादा काग़ज़ देख कर चकित रह गए और दूत से इसका उत्तर मांगा। दूत ने प्राण की रक्षा की शर्त पर बताया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या से दमिश्क़ में बेचैनी फैल गयी है, साठ हज़ार योद्धा बदला लेने के लिए मरने-मारने पर उतारू हैं, बस इशारा मिलने की देर है। ज़्यों-ज़्यों देर हो रही है अमीरुल मोमिनीन को भी इसमें आरोपित किया जाने लगा है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या तुम नहीं देखते कि मैं विवश हूं। ऐ मेरे मौला! तू गवाह रह कि मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या में बिल्कुल शरीक नहीं हूं। वाक्य पूरा भी न हुआ था कि वहां मौजूद लोग भड़क उठे और दूत को मारने के लिए हाथ उठ भी गए। मगर अमीरुल मोमिनीन के समझाने-बुझाने पर कि इसमें इसकी क्या ग़लती है, सब चुप हो गए। फिर भी अमीरुल मोमिनीन बहुत परेशान थे। आपने ऐसी ही स्थिति में फ़रमाया, देश के सपूतो! अपने हथियारों से लैस होकर तैयार हो जाओ। चार हज़ार लोग तत्काल तैयार हो गए और अमीर मुआविया के विरुद्ध बिना सोचे-समझे लड़ाई का एलान कर दिया।

स्थिति बिगड़ती देख हज़रत तलहा और ज़ुबैर जैसे वरिष्ठ नेताओं ने बाहर जाने की ठान ली और उन्होंने अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु से निवेदन किया कि उनको उमरा करने की अनुमति दी जाए। इसी तरह जब हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा हज से वापस आ रही थीं तो रास्ते में उन्हें अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़लीफ़ा बनाए जाने की ख़बर मिली। वह बेचैन हो उठीं, बोलीं, यह हिम्मत मुझे नहीं तुरन्त मक्का वापस ले चलो। जब तक हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या का बदला न ले लिया जाएगा, मुझे सब्र न आएगा, वह यह कह

कर वापस मक्का को लौट गईं। मक्का में परेशान लोग उनके चारों ओर जमा हो गए।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने मुसलमानों को सम्बोधित किया और क़ुरआन की आयत पढ़ी— 'अगर मुसलमानों के दो फ़रीक़ आपस में झगड़ पड़ें तो उनमें सुलह-सफ़ाई करा दो, लेकिन अगर एक फ़रीक़ अन्याय करते हुए दुर्व्यवहार करे, तो उसके विरुद्ध लड़ाई करो, जिसने अन्याय किया, यहां तक कि वह अल्लाह के आदेश को मान ले। उनके बीच न्याय करो। अल्लाह उन लोगो से प्यार करता है जो न्याय करते हैं। (पारा 9, पृ० 49)

इस बीच तलहा और ज़ुबैर भी मक्का पहुंच गए। पूरी दास्तान सुनाई, लोग सुन-सुन कर रोने और सर पीटने लगे। वे क़समें खा खाकर कहते कि जब तक हत्यारों से बदला न लिया जाएगा, उन्हें चैन न आएगा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के नाते-रिश्तेदारों और बनू उमैया के परिवार के दूसरे लोग स्वभावतः अत्यन्त परेशान थे और उनकी समझ में न आता था कि घटनाओं पर कैसे क़ाबू पाया जाए। ज़ुबैर ने कहा कि अब अधिक सोचने-समझने का समय नहीं। मक्का वासियों को चाहिए कि वे मामले को अपने हाथ में लेकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों को उनके किए की सज़ा दिलाएं।

लोग पहले ही बेचैन थे, यह भाषण सुन कर और भड़क उठे और हज़ारों आदमी झंडे तले आ मौजूद हुए। तै पाया कि द्रोहियों को सज़ा देने के लिए सबसे पहले बसरा पर हमला किया जाए। तीन हज़ार आदमी अपने घरों से इस उद्देश्य के लिए निकल पड़े। वे कहते, 'हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या हुए चार महीनों का समय बीत चुका है और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अभी तक हत्यारों के विरुद्ध उंगली तक नहीं उठाई।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के नेतृत्त्व में यह सेना मक्का से चली। वह एक ऊंट पर सवार थीं। रास्ते में लोग आ-आकर मिलते गए और वह सेना एक भारी भरकम सेना बन गई। जब यह सेना "बबूब" पहुंची तो हज़रत आइशा कुत्तों के भोंकने की आवाज़ सुन कर परेशान हो गईं, उन्हें प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह भविष्यवाणी याद आ गई कि बबूब के कुत्ते मेरी एक बीवी को भोंकेंगे[1]। उन्होंने इरादा कर लिया कि वापस लौट जाएं, पर लोगो ने उन्हें विश्वास दिलाया कि यह बबूब नहीं हैं और उनसे कहा कि बिल्कुल वापस

1. इब्ने असीर

न जाएं, वरना ख़तरा है कि सेना में फूट पड़ जाएगी और बिखर जाएगी।

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ कि एक सेना बसरा पर चढ़ाई कर रही है तो उन्होंने शाम पर चढ़ाई करने का इरादा स्थगित करके अपनी सेनाएं बसरा की ओर रवाना कर दीं।

जब यह सेना उस प्रतिष्ठित महिला के नेतृत्त्व में बसरा के निकट पहुंची तो बसरा के गवर्नर ने अपने दो प्रतिनिधि उनकी सेवा में भेजे, यह मालूम करने की लिए कि वे क्यों आए हैं। उन्होंने शिष्टतापूर्वक उत्तर दिया कि मैं उस बिगाड़ को ख़त्म करने आई हूं जो इस्लाम के नाम पर पैदा हो गया है। आपको मालूम है कि द्रोहियों ने किस तरह मदीने का घेराव करके निरपराध हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की क्रूरतापूर्ण हत्या कर दी। अगर यही स्थिति रही तो कहा नहीं जा सकता कि यह बिगाड़ क्या रंग लाएगा। आज अगर एक की बारी है तो कल दूसरे की होगी।

गवर्नर को इस बात से तसल्ली न हुई। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक बार फिर बात की और बताया कि उनका उद्देश्य लड़ाई नहीं है। वे तो हत्यारों को गिरफ़्तार कर उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा देने के लिए आई हैं। जब गवर्नर के आदमियों पर इसका प्रभाव न हुआ, तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जन-साधारण को सम्बोधित करके कहा, कुछ लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के शासन पर भरपूर आलोचना करते थे। वे मदीना आकर अपनी काल्पनिक शिकायतों को हमसे बयान करते। हमने उन्हें सदैव मश्विरा दिया कि शांति भंग न करें। जब हमने उन शिकायतों की तफ़्तीश की तो वे सब काल्पनिक निकलीं और यह सिद्ध हो गया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कोई ग़लत काम नहीं किया था। वह सदाचारी और पवित्र थे। हर क्षण अल्लाह से डरने वाले व्यक्ति थे। इसके विरीत शिकायत करने वाले झूठे, फ़रेबी और दग़ाबाज़ लोग थे। उन्होंने धोखे से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में घुसकर उनकी क्रूरतापूर्वक हत्या कर दी। अब ध्यान से सुनो कि हमारा काम सिर्फ़ उन लोगों को गिरफ़्तार करना है, जिन्होंने यह द्रोह किया।

यह निश्चित था कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का उद्देश्य ख़ून-ख़राबा न था। बसरा के बहुत से लोग हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का वक्तव्य सुनकर इतने प्रभावित हुए कि वे उनकी फ़ौज में लड़ने के लिए शामिल हो गए। परेशानी का एक दिन और बीत गया। सेनाएं एक दूसरे के मुक़ाबले में डेरा डाले पड़ी रहीं, पर किसी को साहस न हुआ कि तलवार उठाकर आक्रमण कर दे।

सरकारी सेना में भारी संख्या उन द्रोहियों की थी जो अमीरुल मोमिनीन की हत्या के ज़िम्मेदार थे। वे इसी यत्न में थे कि एक बार ख़ून ख़राबा हो जाए और उन्हें लूट-पाट का अवसर मिल सके। आख़िर उस सेना के एक व्यक्ति ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सेना पर आक्रमण कर दिया। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वहां से कूच का आदेश दे दिया और सेना को दूसरी जगह ले गईं।

इधर सरकारी सेना ने यह समझा कि शायद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा डर कर चली गईं। उन्होंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जिसके बारे में कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनगिनत शैदाई सेना में मौजूद थे। वे यह सुनकर भड़क उठे। द्रोह में उग्रता आ गई। फिर अगले दिन धावा भी बोल दिया। आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा नहीं चाहती थीं कि मुसलमानों का ख़ून बहे, लेकिन मजबूरी थी, इसके अलावा और कोई रास्ता न बचा था। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह लड़ाई लड़ी भी तो आत्मरक्षा के लिए। बसरा के लोगों को पराजय का मुंह देखना पड़ा, अन्ततः शान्ति के लिए निवेदन किया गया। अभी शान्ति-प्रक्रिया चल ही रही थी कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर रात के वक़्त आक्रमण हो गया। शत्रुओं को पराजय का मुंह देखना पड़ा और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने सत्तरह अक्तूबर 656 ई० को बसरा पर क़ब्ज़ा कर लिया।

क़ब्ज़े के बाद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक एलान किया, जिससे उनकी नेक नीयती और सदाचरण का पता चलता है। इस एलान से साफ़ मालूम होता है कि वह मुसलमानों में ख़ूंरेज़ी (रक्तपात) को गुनाह समझती हैं। फिर भी उन्हें इतना विवश कर दिया गया कि लड़ाई के अतिरिक्त कोई रास्ता भी न बचा। उनकी लड़ाई अत्मरक्षा के लिए थी। बहरहाल बसरा वालों की बड़ी पराजय हुई, बहुत से लोग मारे गए, अन्ततः शान्ति की अपील हुई। आख़िर बात-चीत के बाद तै पाया कि कुछ लोग मदीना भेजे जाएं यह मालूम करने के लिए कि हज़रत तलहा व ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हज़रत अली की बैअत अपनी रज़ामंदी से की थी, या उनसे ज़बरदस्ती ली गई थी। अगर यह प्रमाणित हो जाए कि उन्होंने रजामंदी से बैअत की थी, तो बसरा हज़रत आइशा के सुपुर्द किया जाएगा और अगर उत्तर न में हो तो ये सेनाएं स्वयं बसरा से कूच कर जाएंगी। एक कमीशन मदीना भेजा गया और बड़ी छान-फटक के बाद उन्होंने रिपोर्ट दी कि सच में

तलहा व ज़ुबैर से जबरदस्ती बैअत ली गई थी।[1] इन दुष्टों ने इस रिपोर्ट की परवा न करते हुए हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर रात के समय धावा बोल दिया, पर उनकी पराजय हुई और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने सत्तरह अक्तूबर 656 ई० को बसरा पर क़ब्ज़ा कर लिया।

क़ब्ज़े के बाद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने घोषणा की जिससे उनकी नेक नीयती का पता चलता है। उस घोषणा का सार यह था—

'बसरा पहुंच कर हमने सामान्य सन्देश दिया कि लोग अल्लाह के आदेशों का पालन करें। भद्र पुरुषों ने हमारे सन्देश को अपनाया, लेकिन वे जो दुष्ट थे, उन्होंने तलवार से हमारा विरोध किया। उन्होंने हमें धमकी दी कि वे हमारा अंजाम भी हज़रत उस्मान जैसा करेंगे। उन्होंने दुराग्रह दिखाते हुए हमें विधर्मी और काफ़िर कहा। उन्होंने हमारे बारे में ऐसी बातें गढ़ीं कि धरती और आकाश कांप उठे। जब हमारे आदमियों ने उन्हें कुरआन की आयत पढ़कर सुनाई 'क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया है' तो कुछ पर इस आयत का यह प्रभाव पड़ा कि उन्होंने हथियार डाल दिए। हमने उन लोगों से जिन्होंने हथियार डाले थे, किसी प्रकार की पकड़ नहीं की। उन लोगों ने फिर विद्रोह किया, मगर 26 दिन तक हमने उनसे कोई छेड़-छाड़ नहीं की और नम्रतापूर्वक उन लोगों को समझाते-बुझाते रहे। उन्होंने धोखे से हमारे मुक़ाबले के लिए सेना तैयार की और हमसे लड़ाई लड़े। इस लड़ाई में हम जीते और विरोधियों के बहुत से लोग मारे गए।

हम तमाम लोगों से समानता और न्याय का व्यवहार करेंगे, उनके अलावा जो उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारे थे, उन लोगों ने हमारी माफ़ी के बावजूद हमारी कुछ परवाह न की और एक रात मेरी हत्या के लिए मेरे ख़ेमे में आ घुसे और अभी दाख़िल ही हुए थे कि कुछ आदमियों ने उन्हें पकड़ लिया और क़त्ल कर डाला। हम लागों से निवेदन करते हैं कि वे हत्यारों को अपने यहां शरण न दें और न किसी प्रकार उनकी सहायता करें।'

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ कि मक्का की सेनाएं हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के नेतृत्व में बसरा की ओर बढ़ रही हैं तो वह एक भारी सेना लेकर कूफ़ा की ओर गए। कूफ़ा का गवर्नर अबूमूसा अशअरी था। उन्हें

1. इब्ने असीर

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की कार्य-नीति से मतभेद था। वह भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों से बदला लेने पर आग्रह कर रहे थे और लोगों से कहते कि स्थिति को देखते हुए मैं तुम से कहता हूं कि तुम निष्पक्ष रहो और उन्होंने बसरा की ओर सेना भेजने और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से लड़ने से इन्कार कर दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको हटा दिया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों को विश्वास दिलाया कि वह मदीना के बजाए कूफ़ा को राजधानी बनाएंगे, बस शर्त यह है कि लोग इस अवसर पर उनकी सहायता करें। फिर वह स्वयं बीस हज़ार की सेना लेकर बसरा आ गए। कई दिन तक बातों का सिलसिला जारी रहा। दोनों सेनाएं आमने-सामने डेरा डाले पड़ी थीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को सन्देश भेजा कि छः हज़ार मुसलमान पहली लड़ाई में काम आए हैं। मैं स्वयं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों से बदला लेना चाहता हूं, पर विवश हूं। अगर लड़ाई हुई तो और छः हज़ार मुसलमान मुफ़्त में मारे जाएंगे।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब में सन्देश भेजा कि पांच माह गुज़र चुका है और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों की कोई पकड़-धकड़ नहीं हुई, न पूछ-ताछ हुई। हमारा उद्देश्य केवल हत्यारों को सज़ा दिलाना है। अगर हमें विश्वास दिला दिया जाए कि हत्यारों से बदला लिया जाएगा तो जिस तरह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु चाहें हम करने को तैयार हैं।

एक ओर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु घोड़े पर सवार होकर कैम्प से बाहर आए, दूसरी ओर तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु उनके स्वागत के लिए निकले, खुले दिल से भेंट हुई। पहले तो दोनों फ़रीक़ो ने शिकवा-शिकायतें बयान कीं, फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर को सम्बोधित करके कहा, क्या तुमने मेरी बैअत नहीं की थी? उन्होंने उत्तर दिया, निश्चित रूप से। हमें अब भी आप से कोई शिकायत नहीं। हमारी केवल एक मांग है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों को भरपूर सज़ा दी जाए।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें अपनी निष्ठा का विश्वास दिलाते हुए कहा, हम स्वयं यही चाहते हैं, पर अभी विवश हैं, इसलिए कुछ समय मिलना चाहिए। ये तीनों व्यक्ति इस पर राज़ी हो गए। तै पाया कि अगले दिन इस प्रश्न पर फिर बात की जाएगी।

जुमल की लड़ाई

(सन् 36 हिजरी, मुताबिक़ 656 ईस्वी)

अभी बात-चीत का सिलसिला चल ही रहा था कि उसी रात बिगाड़ चाहने वाले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सिपाहियों ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सेना पर अचानक आक्रमण कर दिया। बड़े घमासान की लड़ाई हुई। हज़ारों मुसलमान मारे गए। मुंह अंधेरे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा एक ऊंट पर सवार इस नीयत से ख़ेमा से निकलीं कि शायद उन्हें देखकर लोग लड़ाई से बाज़ आ जाएं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं परेशान थे। हर फ़रीक़ यही समझता था कि दूसरे फ़रीक़ ने उन पर आक्रमण कर दिया है। लड़ाई भयावह रूप लेती जा रही थी। इसी बीच हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम आपस में मिले। उन्होंने लड़ाई समाप्त करने का हर संभव यत्न किया। पर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि किया क्या जाए। ऐसी स्थिति में जबकि ये लोग सलाह व मश्विरे में लगे हुए थे, द्रोहियों ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के ऊंट का घेराव कर लिया। वहां पर भीषण युद्ध हुआ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के आदमी इस बात पर तुले हुए थे कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को गिरफ्तार कर लिया जाए और मुसलमान विवश थे कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चहेती बीवी के सम्मान को अपनी जान पर खेल कर बचा लें।

विद्रोहियों ने वाणों की भारी वर्षा शुरू कर दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हर संभव उपाय किया, मगर किसी ने नहीं सुना। भारी ख़तरा देखते हुए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के ऊंट की ओर बढ़े और आदेश दिया कि ऊंट की पिछली टांगें काट दो। उनके भाई मुहम्मद बिन अबूबक्र उनकी कुशलता मालूम करने आए। अभी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से बातें कर ही रहे थे कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आ पहुंचे। बड़े मान-सम्मान के साथ उन्हें अपने साथ ले गए और बसरा के सबसे प्रतिष्ठित सरदार का घर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के रहने के लिए हासिल किया। कुछ दिनों ठहरने के बाद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा मदीना चली गईं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूरे मान-सम्मान के साथ उन्हें विदा किया। चालीस औरतों और मुहम्मद बिन अबूबक्र को उनके साथ भेजा और उन्हें विदा करने के लिए स्वयं पैदल गए। मदीना पहुंच कर वह उमरा के लिए मक्का तश्रीफ़ ले गईं, फिर मदीना लौट आईं और कई साल तक वहीं ठहरी रहीं और सन् 58 हि० में, जबकि उनकी उम्र 63 साल की थी, उनका देहावसान हो गया।

वायदे के अनुसार हज़रत ज़ुबैर लड़ाई के बाद मदीना की ओर चल पड़े। रास्ते में जब वह नमाज़ की हालत में अल्लाह के आगे सज्दे में पड़े हुए थे तो एक दुष्ट ने उनका सर काट लिया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में भेज दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सर देखकर कांप उठे और कहा कि हत्यारे को सूचित कर दो कि उसने अपना घर दोज़ख़ में बना लिया है। तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ और एक दुष्ट ने उन्हें तीर मार-मार कर शहीद कर डाला।

हज़रत ज़ुबैर और हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ये वह बुज़ुर्ग हैं, जिनकी बड़ी सेवाएं हैं और इस्लाम के विस्तार में इन बुज़ुर्गों का बड़ा हाथ है। इस गृह युद्ध में लगभग बीस हज़ार मुसलमान मारे गए और लाखों रुपए की हानि हुई। वह शक्ति, जो कभी शत्रुओं के मुक़ाबले में बड़ी शान से लड़ा करती थी, आज एक दूसरे का गला काटने में सफल हुई। वास्तव में यह विजय फ़सादियों की विजय थी और इसका परिणाम यह निकला कि हज़रत अली रह० का शासन कमज़ोर हो गया और सर विलियम मयोर के कथनानुसार अगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु विद्रोहियों को अपने साथ मिलाने के बजाए हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर के साथ मिल जाते तो निश्चय ही वे अशुभ घड़ियां, जो बाद में इस्लाम पर आईं, टल जातीं।

लड़ाई के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुश्मनों और दोस्तों के साथ उदारतापूर्ण व्यवहार किया। उन्होंने दुश्मनों की कोई पकड़ नहीं की और उनके लिए ख़ज़ानों के मुंह खोल दिए जो उनकी ओर से लड़े थे। मरवान और परिवार के दूसरे लोग बसरा से भाग कर शाम जा पहुंचे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अधिक समय तक बसरा में न ठहरे, अलबत्ता अब्दुल्लाह बिन अब्बास को बसरा का गवर्नर नियुक्त कर लिया।

राजधानी बदली गई

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा वालों से जब सहायता मांगी थी, तो उनसे यह भी कहा था कि विजयी होने पर राजधानी मदीना के बजाए कूफ़ा को बना देंगे। इसलिए सन् 36 हिजरी में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की मृत्यु के सात माह बाद मदीनतुन्नबी को छोड़कर कूफ़ा को राजधानी बनाया गया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का विचार था कि मदीना के लोगों से इतनी सेवा की आशा नहीं की जा सकती जो लड़ाई के अवसर पर कूफ़ा के लोग कर सकते थे। उनका विचार था कि अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से उन्हें अवश्य लड़ना पड़ेगा और कूफ़ा के बद्दू ऐसे अवसर पर अति लाभप्रद और काम के साबित होंगे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों की सज़ा की मांग कुछ समय के लिए ठंडी पड़ गई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने चचेरे भाइयों को जो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के 'बेटे थे, विभिन्न स्थानों पर गवर्नर नियुक्त कर दिया, पर इससे कोई लाभ न हुआ और जल्द ही फिर वातावरण बदल गया। उश्तुर ने बसरा में दुष्टता दिखानी शुरू कर दी। उसने दुष्प्रचार आरंभ कर दिया कि 'हमें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या का क्या लाभ मिला है? हमने अपने भाई बन्धु तलहा और ज़ुबैर की हत्या करके क्या हासिल किया है? बसरा की लड़ाई में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का अपमान करके हमें क्या मिला है?

उश्तुर के इन राष्ट्रद्रोही कार्यों पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उश्तुर को कूफ़ा बुलाया और उसका मुंह बन्द करने के लिए उसे एक उच्च पद पर आसीन कर दिया, फिर भी इस नीति से कोई लाभ न हुआ, क्योंकि उसके दूसरे साथियों ने फ़ारस की ओर जाकर सीस्तान पर आक्रमण कर दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस द्रोह को ठंडा करने के लिए एक जनरल की नियुक्ति कर दी, पर इन द्रोहियों ने उसकी भी हत्या कर दी। स्थिति तेज़ी से बिगड़ने लगी, पर अल्लाह की कृपा हुई और अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने वहां पहुंच कर हालात पर क़ाबू पा लिया।

मिस्र के गवर्नर ने विद्रोह का झंडा उठा लिया, वहां भी हलचल मच गई अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पुराने गवर्नर को हटाकर

क़ैस बिन साद बिन उबैदा को वहां का गवर्नर नियुक्त किया। उन्होंने जल्द ही ऐसी सुव्यवस्था की कि द्रोही गवर्नर भागकर शाम चला गया, पर थोड़े ही दिनों के बाद लोगों ने उसकी हत्या कर दी। क़ैस मिस्रियों में बड़े लोकप्रिय हुए और उन्होंने पूरी मिस्री क़ौम से वचन ले लिया कि वे हज़रत अली पर जान निछावर कर देंगे और हर पहलू से वफ़ादार बन कर रहेंगे।

अधिक समय न बीता था कि एक ज़िले में यज़ीद बिन हर्स ने एक गुट बनाकर फिर मांग शुरू कर दी कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या का बदला हत्यारों से लिया जाए। क़ैस ने ऐसी मुस्तैदी दिखाई और ऐसी व्यवस्था की कि द्रोही उस ज़िले से बाहर नहीं आ-जा सकते थे, अलबत्ता उनके मामले में दख़ल देना उचित नहीं जाना, यहां तक कि मामला दब गया।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु क़ैस की योग्यताओं को जानते थे कि क़ैस एक उच्च कोटि के जनरल हैं। इसलिए वह इस चक्कर में थे कि क़ैस किसी तरह उनके पास आ जाएं। उन्हें इस बात का भी ख़तरा था कि कहीं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उन पर धावा न बोल दें। ऐसे अवसर पर क़ैस लाभप्रद सिद्ध होंगे और काम के आदमी साबित होंगे। इस दृष्टि से अमीर मुआविया ने बहुत कोशिश की कि क़ैस उनके पास आ जाएं, लेकिन क़ैस ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वह हज़रत अली का साथ नहीं छोड़ेंगे। अन्त में क़ैस के ख़िलाफ़ यह चाल चली गई कि उनका चरित्र बिगाड़ दिया जाए, चुनांचे यह बात उड़ा दी गई कि क़ैस वास्तव में विरोधियों से मिले हुए हैं, इसी लिए वह उन लोगों की पकड़ नहीं करते जो हज़रत अली के विरुद्ध प्रचार करने में लगे हुए हैं।

इसका प्रचार इतना हुआ कि अमीरुल मोमिनीन को क़ैस की परीक्षा लेने पर सोचना पड़ा। फिर उन्होंने इस बात पर दबाव डाला और कहा कि हत्यारों को तुरन्त उनके अन्तिम परिणामों तक पहुंचाया जाए। क़ैस ने इसे तत्काल अव्यवहार्य समझा। प्रचार होने लगा कि क़ैस द्रोहियों के साथ हो गए हैं, तभी तो उन्हें सज़ा नहीं दे रहे हैं। अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु तक बात पहुंची और इस प्रचार को सही मान कर ख़लीफ़ा ने क़ैस को बरतरफ़ कर दिया और उनकी जगह बदनाम मुहम्मद बिन अबूबक्र की नियुक्ति कर दी।

क़ैस मिस्र से मदीना चले गए। अमीरुल मोमिनीन को जल्द ही उसकी निष्ठा का पता चल गया और मरवान के माध्यम से वह फिर 'गुडबुक' में आ

गए। यह बात अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को पसन्द न आई। उन्होंने मरवान को पत्र लिखा कि अगर तुम अमीरुल मोमिनीन को एक लाख योद्धा जुटा देते, पर क़ैस को उनसे समझौता न कराते तो मैं सदैव के लिए तुम्हारा कृतज्ञ रहता, पर क़ैस से अमीरुल मोमिनीन से समझौता कराके तुमने मुझ पर अत्याचार किया है।

जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर मदीना में अत्याचार किया जा रहा था तो मिस्र के विजेता हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपने दो बेटों को लेकर बैतुल मक़्दिस चले गए। अभी वहीं उनका निवास था कि उन्हें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या की ख़बर पहुंची। वहां से अपने हटने पर वह बहुत लज्जित हुए और कहने लगे, मुझे मदीना के बाहर नहीं जाना चाहिए था और मेरे लिए अनिवार्य था कि मैं हज़रत उस्मान की सहायता करता, वह अभी बैतुल मक़्दिस ही में थे कि उन्हें हज़रत अली की ख़िलाफ़त और बसरा की विजय का पता चला। वह इन घटनाओं से इतनी दुखी हुए कि अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास दमिश्क़ पहुंच गए। शुरू में अमीर मुआविया ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया, पर कुछ दिनों के बाद उनके अनुभव, क्षमता, योग्यता और सूझ-बूझ को देख कर उन्हें अपने पास बुला लिया।

क़ैस को मिस्र से बुला लेना एक भारी भूल थी। उनके चले जाने के बाद लोगों ने ख़ूब खेल खेले। हज़रत तलहा और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का क़त्ल अमीर मुआविया के पक्ष में गया। उन्होंने इसका ख़ूब लाभ उठाया कि बसरा की लड़ाई में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वे लोग सहायता कर रहे थे, जिन्होंने हज़रत उस्मान की हत्या की थी। उन्होने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ून में लथ-पथ कुरता और उनकी पत्नी की कटी हुई उंगलियां मस्जिद के आंगन में रख दीं। लोग इससे बहुत प्रभावित हुए और प्रतिशोध की भावना पहले से अधिक भड़क उठी।

सिफ़्फ़ीन की लड़ाई

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के राजधानी बदलने से कुछ दिनों तक तो शान्ति रही। आस-पास के इलाक़ों से अमीरुल मोमिनीन से बैअत होने के लिए जत्थे के जत्थे कूफ़ा आने शुरू हुए। एक बद्दू सरदार के साथ अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की बड़ी मैत्री थी। वह कूफ़ा का रहने वाला था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास यह सन्देश देकर भेजा कि वह अमीरुल मोमिनीन की बैअत कर लें और इस्लामी राज्य को अशान्ति का शिकार होने से बचाएं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह भी कहला भेजा कि आपके वफ़ादारी का हलफ़ न लेने से ख़तरा है कि मुसलमानों में बिगाड़ और उपद्रव की आग भड़क उठे।

अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मित्र बद्दू सरदारे का बड़ा आदर-सत्कार किया और कहा कि मुझे बैअत लेने में किसी प्रकार का संकोच नहीं है, न इंकार है, मैं यह भी मानता हूं कि इस स्थिति में इस्लामी राज्य के विनाश की प्रबल आशंका है, पर जब तक हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों का बदला न लिया जाए, मेरा बैअत लेना असंभव है। जब तक मैं हत्यारों को भरपूर सज़ा न दिला दूंगा, चैन न लूंगा। मैं समझता हूं कि ये द्रोही इस्लाम और मुख्य रूप से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए बहुत फ़ित्ना हैं। हम शामी सरदारों ने हलफ़ ले रखा है कि हम सोने के लिए बिस्तर और पलंग इस्तेमाल न करेंगे, स्नान न करेंगे, जब तक कि हम हत्यारों को मृत्यु के घाट न पहुंचा दें। अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस दूत को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ून से लथ-पथ कुरता और उनकी पत्नी की कटी हुई उंगलियां, जो मस्जिद के आंगन में पड़ी थीं, दिखायीं और रो-रो कर कहा कि कैसा अत्याचार है कि इन दुष्टों ने निष्ठुरतापूर्वक हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या कर दी और अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अभी तक उनको सज़ा देने की व्यवस्था न की।

दूत ने वापस आकर अमीरुल मोमिनीन को तमाम बातें बताईं और बड़ी शिष्टता के साथ निवेदन किया कि जब तक हत्यारों से बदला न ले लिया जाए,

1. अमीर मुआविया का सेनापति

अमीर मुआविया बैअत करने के नहीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सोच विचार करके अमीर मुआविया पर चढ़ाई की ठान ली और सेना भेजने का आम ऐलान कर दिया। पचास हज़ार की भारी सेना लेकर अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं रवाना हुए। उनका इरादा था कि इराक़ से होकर वह शाम के उत्तरी हिस्से पर हमलावर होंगे, लेकिन शाम की सीमा पर ऐसे अवरोधों का सामना करना पड़ा कि इराक़ वापस आ गए। उश्तुर भी इस लड़ाई में शामिल था। उश्तुर ने लोगों को विवश करके फ़रात नदी पर नावों का एक पुल बनवाया कि सेना उसे पार कर सके। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की सेनाएं हलब की ओर बढ़ीं और अमीर मुआविया की सेनाओं से टक्कर हो गई।

अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की सेना के सेनापति अम्र थे। उनके दोनों बेटे उनके साथ थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़ी कठोरता से आदेश दिया कि मेरी सेना आक्रमण करने में बिल्कुल पहल न करे, जब तक कि सरदार मुझसे सीधे-सीधे इस बात के बारे में मालूम न कर लें।

उनका विचार था, शायद ऐसा कोई उपाय निकल आए जिससे मुसलमान आपस में ख़ून बहाने से बच जाएं। कुछ दिन इसी तरह निकल गए। एक दिन उश्तर ने मैदान में जाकर पुकारा, कोई वीर है जो मेरे मुक़ाबले के लिए बाहर निकले, पर उसे उत्तर मिला कि तुमने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ून से अपने हाथों को रंगीन किया है और उनकी हत्या का बोझ तुम्हारी गरदन पर है, इसलिए तुम जैसे गुनाहगार के साथ कोई लड़ना नहीं चाहता। इस वजह से तुम इस योग्य नही हो कि तुमसे कोई लड़ना पसन्द करे।

जहां अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौजें डेरा डाले थीं, वह ऐसी जगह थी कि शत्रु सेनाएं उन का पानी बिल्कुल नहीं बन्द कर सकती थीं। अम्र ने इसे एक बड़ी ग़लती समझी, जल्दी से जगह बदल कर सिफ़्फ़ीन नामक स्थान पर डेरे डाल दिए। यह जगह हलब से सौ मील दक्षिण पूरब में स्थित है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन सरदार इस काम पर नियुक्त किए कि वे अमीर मुआविया से मांग करें कि मुसलमानों के हित में तत्काल अमीरुल मोमिनीन की बैअत कर लें। देर तक बात-चीत का सिलसिला चला। अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को बैअत करने पर कोई आपत्ति नहीं थी, बस शर्त यही थी कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों से बदला लेने का वायदा करें। फिर साफ़-सुथरी बातें करने के बजाए आरोपों का

दौर शुरू हो गया, बात-चीत झगड़े में बदल गयी और झगड़े ने विधिवत हल्ला बोल दिया। आख़िर अमीर मुआविया को कहना पड़ा, यहां से निकल जाओ, तलवार हमारे और तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगी।

लड़ाई की तैयारियां आरंभ हो गईं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी सेना को तर्तीब दिया और हज़रत अमीर मुआविया ने अपनी सेना को। लड़ाई इस तरीक़े से शुरू हुई कि हर एक की टुकड़ियां एक-एक करके मैदान मे आतीं, कभी किसी का पल्ला भारी रहता, कभी किसी का, इस तरह एक महीना बीत गया। अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हत्यारों से बदला लेने पर आग्रह करते और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते, अभी बदला लेने का समय नहीं आया। लेकिन डरते थे कि मुसलमानों का यह आपसी टकराव रंग लाएगा, निरपराधों का ख़ून बहेगा और इस्लामी राज्य के हिस्से बख़रे होंगे।

नया साल आया तो एक महीने के लिए अस्थायी समझौता हो गया। नए सिरे से बात-चीत शुरू हुई। अपनी-अपनी बात पर अड़े रहने से कोई सद् परिणाम न निकला। लड़ाई होनी थी, शुरू हो गई दोनों ओर से, सेनाओं ने एक दूसरे पर हल्ला बोल दिया। लड़ाई ज़ोरों से शुरू हो गई। और ख़ून-ख़राबे का बाज़ार गर्म हो गया। लड़ाई अपना रंग दिखा ही रही थी कि अचानक अम्र सेनापति ने अपनी सेना को आदेश दे दिया कि क़ुरआन के पन्नों को नेज़ों पर लटकाओ। सैनिकों ने आदेश का पालन किया और चीख पड़े, ख़ुदा का क़ानून, ख़ुदा का क़ानून आज हममें फ़ैसला कर देगा। आओ, उसके सामने सर झुकाएं।'

इस चाल का तत्काल प्रभाव पड़ा और लड़ाई थम गई। अमीर मुआविया की ओर से हज़रत अम्र और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर से अबू मूसा अशअरी पंच बनाए गए। इन पंचों ने जो निर्णय दिया वह यह था कि दोनों ग्रुप क़ुरआन के आदेशनुसार निर्णय करेंगे और अगर किसी मामले में क़ुरआन का स्पष्ट आदेश न मिले, तो फिर हदीस से मदद ली जाएगी, हर हालत में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की और इनके परिवार के सदस्यों की जानों की रक्षा की जाएगी। झगड़ा समाप्त करने लिए दोनों ओर से पंच नियुक्त किए गए और तमाम मामलों की छान-फटक करने के बाद उन्होंने जो निर्णय दिया, उसकी मुख्य बात यह थी कि हज़रत अली ख़लीफ़ा बने रहेंगे और अमीर मुआविया उनकी सहायता करेंगे।

ख़ारजियों से लड़ना पड़ा

जब हर तरह से मामला रफ़ा-दफ़ा हो गया तो सेना में कुछ लोग ऐसे भी उभरे, जिन्होंने निर्णयों पर आलोचना कर दी। मतभेद की खाई फैलती चली गई, यहां तक कि बारह हज़ार लोग सेना से अलग हो गए। अलग होने को अरबी में ख़ारिज होना कहते हैं, इसलिए ये लोग ख़ारिजी कहलाए।

इन लोगों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की सेना से निकल कर अपनी व्यवस्था अलग कर ली। कूफ़ा के नज़दीक एक गांव हरदरा में अपने डेरे डाल दिए। इनमें से अधिकतर लोग तमीम, बक्र और हमदान क़बीलों से सम्बन्धित थे। उन्होंने अपने ही में से एक व्यक्ति को अपना सेनापति बना लिया। उनका कहना था निर्णय ख़ुदा के हाथ में होता है। निर्णय के लिए किसी ख़लीफ़ा या बादशाह की आवश्यकता नहीं। मुसलमानों पर शासन एक समिति द्वारा होना चाहिए। इन्होंने अपने 'सिद्धान्तों' का प्रचार इस बड़े पैमाने पर किया कि इनके विचारों को मान्यता देने वाले हर जगह पैदा होते चले गए।

यह एक ऐसा विचार था जिसकी चोट पूरी ख़िलाफ़त-व्यवस्था पर पड़ रही थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बहरहाल चिन्ता हुई। उन्होंने अपने चचेरे भाई इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ारिजियों के सरदार के पास भेजा कि वह उनसे बात-चीत करके उन्हें सीधे रास्ते पर लाएं। पर कोई नतीजा नहीं निकला। इसके बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके सरदार से सीधे-सीधे बात-चीत की और उन्हें समझाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के समझाने का प्रभाव सरदार पर अच्छा पड़ा। उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बातें मान लीं और अपना कैम्प तोड़ कर लोगों को अपने-अपने घरों को वापस चले जाने का आदेश दिया।

लेकिन लोगों ने बात मानी नहीं। वे एक जोश के साथ उठ खड़े हुए और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के विरोध पर कमर कस ली। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर इस की प्रतिक्रिया नहीं के बराबर हुई। उनके साथ अच्छा व्यवहार किया। उन्हें मस्जिदों में आने और नमाज़ पढ़ने की आम इजाज़त थी। उनको साफ़-साफ़ कह दिया गया कि अगर ये लोग लड़ाई में ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन का साथ दें तो उन्हें लड़ाइयों में मिले माल में से अनिवार्य रूप से

हिस्सा दिया जाएगा। पर इन लोगों पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव न पड़ा। गवर्नर ने इन्हें बसरा से निकाल दिया।

इस का दुष्परिणाम यह निकला कि ये लोग उस ग्रुप से मिल गए, जो कूफ़ा से इसी उद्देश्य से निकला था। इन लोगों ने एक सेनापति चुनकर यह निर्णय किया कि वे मदायन पर क़ब्ज़ा कर लें और फिर एक काउन्सिल क़ायम करके इस्लामी शासन स्थापित करें और वह अशान्ति जो फैल चुकी है उसकी जड़ें उखाड़ दें। ये इस उद्देश्य से मदायन की ओर बढ़े, लेकिन वहां के गवर्नर ने इन्हें भगा दिया, फिर फ़िरात नदी को पार करके नहरवान पर आ जमा हुए। उनकी संख्या चार हज़ार से कुछ अधिक थी। उनके सरदार अब्दुल्लाह बिन वह्हाब थे।

आरंभ में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस आन्दोलन को बहुत छोटा समझा। उनका विचार था कि जब ये लोग अपने साथियों, मित्रों और नातेदारों को देखेंगे कि वे अमीर मुआविया से लड़ने जा रहे हैं, तो स्वयं ही अपने आन्दोलन को छोड़कर हमारी सेनाओं में आ मिलेंगे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा वालों को यों सम्बोधित किया—

'सरपंचों ने अल्लाह और उसको रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ फ़ैसला करके अपनी बुरी नीयत का पूरा-पूरा सबूत दिया है, इसलिए हमारे लिए अनिवार्य है कि उनसे एक बार फिर लड़ें। इसलिए मैं तुम सबको आदेश देता हूं कि लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ। हम अगले सप्ताह के दूसरे दिन कूच करेंगे।'

अमीरुल मोमिनीन ने साथ ही सन्देश नहरवान भेजा कि आओ, आज इस्लाम के झंडे तले जमा होकर उसका, जोकि हमारा और तुम्हारा शत्रु है, मुक़बला करें, फिर वही समय आ गया है जब कि तुम लोगों ने सिफ़्फ़ीन पर संयुक्त शत्रु का मुक़ाबला किया था।

पर इन लोगों पर इस सन्देश का कोई प्रभाव न पड़ा, बल्कि उन्होंने यह सन्देश भेजा कि इस्लाम के लिए अली रज़ियल्लाहु अन्हु और मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ात में ख़तरा है, इसलिए इन दोनों के विरुद्ध लड़ाई लड़कर अशान्ति को सदा-सर्वदा के लिए समाप्त कर देंगे।

अमीर मुआविया से लड़ने के लिए बहुत ज़्यादा लोगों को उत्तेजित किया गया। उन्हें बताया गया कि इस्लाम की हालत नाज़ुक है और अमीर मुआविया से लड़ना इस्लाम की एक बड़ी सेवा है। पर इन सब बातों का कोई फल न

निकला। लगभग पूरी सेना ने इंकार कर दिया। क़बीलों के सरदारों से मश्विरा किया गया, नए सैनिक भरती किए गए और नयी सेना तैयार हो गई।

इस भारी सेना को लेकर हज़रत अली रज़ि० शाम की ओर चले ही थे कि उन्हें ख़बर मिली कि ख़ारिजियों ने लूट-मार और हत्या से अशान्ति फैला रखी है। अगर इसकी रोक-थाम न की गई तो ख़तरा है कि कहीं वह नया रूप न ले ले। इन लोगों को इसी हालत में छोड़ देना उचित नहीं। अमीरुल मोमिनीन को यह राय पसन्द आई। वह शाम की दजला नदी को पार करके नहरवान जा पहुंचे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन ख़ारजियों के सरदार के पास सन्देश भेजा, बेहतर होगा कि तुम हथियार डाल दो और हमारे दस्त व बाज़ू बन जाओ। उन लोगों ने कहला भेजा, पलटने का कोई प्रश्न ही नहीं पैदा होता, हमारा विश्वास है कि जिन लोगों की हमने हत्या की है, वे नापाक हस्तियां थीं और उनकी हत्या से हमने इस्लाम की बहुत भारी सेवा की है। बात-चीत कई दिन तक चली, लेकिन मानकर न दिया। लड़ाई शुरू हो गई, बुरी तरह परास्त हुए। ख़तरा जाता रहा और वह सांप जो काटने पर उतर आया था, पिटारे में बंद कर दिया गया।

इनमें से अधिकतर लोगों ने, जो फ़ारस भाग गए थे या लड़ाई से ज़िंदा बच कर निकल गए थे, बसरा और कूफ़ा में खुफ़िया तौर पर फ़ित्ना और फ़साद का बीज बोना शुरू कर दिया। अगले वर्ष फिर फित्ना पैदा हो गया और उनके अनगिनत समर्थक भी पैदा हो गए। अमीरुल मोमिनीन की सेनाओं ने उनका फिर मुक़ाबला किया। द्रोहियों के बहुत से आदमी मारे गए, बहुत-से भाग गए, कहने को तो यह सब कुछ उसी नर्मी की वजह से था जो हज़रत उस्मान के हत्यारों के साथ बरती गई। अगर आरंभ ही में उन हत्यारों को उनके अंजाम तक पहुंचा दिया जाता तो शायद इस्लाम को ये बुरे दिन देखने नसीब न होते।

मिस्र में विद्रोह

इस ख़ारिजियों से निमटकर अमीरुल मोमिनीन ने फिर शाम की ओर रुजू किया, लेकिन विद्रोहियों के प्रभावाधीन होने के नाते सेना ने शाम की ओर जाने से इंकार कर दिया। मिस्र की स्थिति भी सन्तोषजनक न थी। वहां भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों से बदला लेने की मांग उग्र होती दिखाई दे रही थी। मिस्र के गवर्नर क़ैस थे, जो बड़े योग्य और सक्षम व्यक्ति थे, लेकिन अमीरुल मोमिनीन ने उनकी कमज़ोरी समझ कर उन्हें उनकी जगह से हटा दिया और मुहम्मद बिन अबूबक्र को वहां का नया गवर्नर बनाया। नए गवर्नर ने समझ से काम लेने के बजाए तंगी दिखाई और भावनाओं का आदर न करते हुए कठोरता से उन्हें दबाना चाहा, जिसका निष्कर्ष यह निकला कि पूरा देश उनका विरोधी हो गया और एलानिया विद्रोह कर दिया।

अमीरुल मोमिनीन को अपनी ग़लती का एहसास हुआ, क़ैस को दोबारा गवर्नर बनाना चाहा, लेकिन इस पद के अपनाने में उन्हें संकोच था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का हत्यारा उश्तुर ही एक ऐसा व्यक्ति था जो घटनाओं पर क़ाबू पा सकता था, उसे मिस्र रवाना किया, लेकिन कुछ लोगों ने उसे रास्ते ही में विष खिला दिया और वह मर गया। लोग बड़े खुश हुए। अमीरुल मोमिनीन के पास इसके सिवा और कोई रास्ता ही नहीं था कि मुहम्मद बिन अबूबक्र को गवर्नर रहने देते। आपने उन्हें लिखा कि होशियारी से काम लेकर विद्रोह को समाप्त करने का हर संभव यत्न करें, पर विद्रोह था कि फैलता जा रहा था। इन परिस्थितियों का फ़ायदा उठाकर अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने अम्र के नेतृत्व में एक सेना भेजी जिसे विजय मिल गई। मिस्र हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के कब्ज़े से जाता रहा और अमीर मुआविया ने वहां अपना सिक्का जमाकर अम्र को अपना गवर्नर नियुक्त कर दिया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के जीवन के शेष दिन भी इसी तरह की परेशानियों में बीते। मिस्र हाथ से जाता रहा, शाम में अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का आग्रह था कि हत्यारों से बदला लिया जाए। कूफ़ा के लोगों ने शासन के विरूद्ध आए दिन प्रदर्शन करके एक विचित्र वातावरण बना रखा था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत परेशान थे, सिर्फ़ इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ही

एक ऐसे व्यक्ति थे जो अमीरुल मोमिनीन की परेशानियों को देखकर तड़पते। वह बसरा के गवर्नर थे। मात्र इस विचार से कि अमीरुल मोमिनीन निराश होकर कहीं ख़लीफ़ा का पद छोड़ न दें, बसरा से कूफ़ा पहुंचे। उनकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर अमीर मुआविया के आदमियों ने बसरा में एक क्रान्ति का वातावरण बना दिया। बसरा में कई क़बीले ऐसे थे जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों से बदला लेने पर आग्रह कर रहे थे, वे तुरन्त अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के आदमियों के साथ मिल गए। कुछ लोग ऐसे भी थे जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों के विरुद्ध थे। उनका विचार था कि इन दोनों की वजह से यह बिगाड़ पैदा हो रहा है।

जब अमीर मुआविया के आदमियों ने विद्रोह किया, तो कुछ दिनों में उनको यह शक्ति मिल गई कि गवर्नर ज़ियाद को वहां से भाग जाना पड़ा। अमीरुल मोमिनीन को घटनाओं से सूचित किया गया। उन्होंने एक भारी सेना मुक़ाबले के लिए भेज दी। विद्रोहियों ने मुक़ाबला किया, वे हारे, वे भाग कर एक क़िले में बन्द हो गए। अमीरुल मोमिनीन की सेना ने क़िले का घेराव करके उसमें आग लगा दी। अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के आदमी और दूसरे लोग जल कर राख हो गए।

ख़ैरात का विद्रोह

ये दंगे केवल बसरा ही में न थे, ख़ारिजियों ने जगह-जगह बहुत से स्थानों पर विद्रोह का बिगुल बजा रखा था। प्रशासन ने बड़ी कड़ाई से हर जगह मुक़ाबला किया और हर जगह उन्हें परास्त होना पड़ा। यह अलग बात है कि जैसे-जैसे उनके साथ कड़ाई की जाती, वे और आगे बढ़कर अधिक साहस के साथ सरकार के विरुद्ध प्रचार करते। ख़ैरात के इब्ने रशीद नाम के एक व्यक्ति ने तो इंतिहा कर दी। वह क़बीला नजया का सरदार था। हज़रत अली के समर्थकों में से था। उसने जुन्दल और सिफ़्फ़ीन की लड़ाइयों में अमीरुल मोमिनीन का साथ दिया था, वह यही कहता कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को सरपंचों का निर्णय मान कर फिर से चुनाव कराना चाहिए। अमीरुल मोमिनीन ने उसे बुलाया कि वह सामने आकर बातें करे, तै पाया कि वह अगले दिन उपस्थित होकर अपने विचार रखेगा, पर उसके दोस्त-यारों ने उसे ख़तरे से सचेत कर दिया और वह रात के वक़्त अपने साथियों समेत भाग गया। सरकारी आदमियों ने उसका पीछा किया, पर सबके सब जान बचा कर अहवाज़ जा पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होंने ईरानियों, कुरदों और ईसाइयों को तैयार किया और विद्रोह पर उभारा। थोड़े ही दिनों में उन्होंने वह प्रभाव जमा लिया कि तमाम फ़ारस में विद्रोह फैल गया। गवर्नर अपनी जान के डर से भाग गया। फिर एक मज़बूत सेना भेजी गई और इन विद्रोहियों को हार का मुंह देखना पड़ा।

इसके बाद किरमान में भी विद्राह हो गया। वहां के लोगों ने भी गवर्नर को वहां से निकाल दिया। अमीरुल मोमिनीन ने ज़ियाद को जो बसरा का गवर्नर था, मुहिम के लिए चुना, उसने हालात पर क़ाबू पा लिया। इस कारनामे पर उसकी प्रशंसा हुई। उसकी सेवाओं के बदले में उसे फ़ारस का गवर्नर नियुक्त किया गया। उसने इतने अच्छे कारनामे अंजाम दिए कि लोग उसे नौशेरवां द्वितीय कहने लगे।

ज़ियाद ने यद्यपि फ़ारस में शान्ति स्थापित कर दी पर अरब और उसके आस-पास अब भी अशान्ति फैली हुई थी, लोगों में आतंक का वातावरण था। हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के आदमी लोगों को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बदले के लिए उभारने वाले प्रचार में हिस्सा लेते। यही

कारण था कि जन-साधारण भले ही मन में कुछ न कहें, मगर अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के शासन को पसन्द न करते। शाम के क्षेत्र से लोग गिरोह बनकर अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के इलाक़े में घुस आते और जो कुछ हाथ लगता लूटकर ले जाते। अरब के लोग उनके मुक़ाबले में हाथ तक न उठाते।

अमीरुल मोमिनीन इससे बहुत दुखी थे। एक दिन झुंझला कर उन्होंने ने कहा कि मैं अकेला जाकर उनका मुक़ाबला करूंगा और वह उनके मुक़ाबले के लिए अकेले निकल भी पड़े। जब कूफ़ा के लोगों ने यह दृश्य देखा, बड़े लज्जित हुए, फिर अपनी लज्जा को छिपाने के लिए एक सेना को शाम की सीमा की ओर भेजा। हज़रत अली की सेनाओं ने उन लोगों को वहां से निकाल दिया और बालबक तक उनका पीछा किया। उन्हीं दिनों अमीर मुआविया मूसल तक आए और कई दिन वहां ठहरे रहे, फिर दमिश्क़ लौट गए।

सन् 40 हिजरी में अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने बसर नामी एक व्यक्ति को तीन हज़ार सवारों के साथ हज के मौक़े पर मक्का भेजा कि वह लोगों को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल के बदले के लिए तैयार करे। मक्का से वह मदीना पहुंचा। जब गवर्नर को उसके आने की ख़बर हुई तो वह वहां से भाग गया। बसर मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुआ और मिम्बर पर चढ़ कर उसने लोगों को यों सम्बोधित किया—

'ऐ मदीना वासियो! वह प्रतिष्ठित और बूढ़ा व्यक्ति, जिनकी हमने कल बैअत की थी, आज कहा हैं, ख़ुदा की क़सम! अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से वायदा लिया था कि मैं किसी के ख़ून से हाथ न रंगूं और न तलवार म्यान से निकालूं, वरना मैं आज हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों को उनके किए का मज़ा चखा देता।'

मदीना से वह फिर मक्का चला गया और मक्का से वह यमन पहुंचा। यहां का गवर्नर हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का बेटा था। वह आपके आगमन की ख़बर सुनकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास कूफ़ा भाग गया और उस बसर ज़ालिम ने मामूली से झगड़े पर गवर्नर के दो लड़के को अति निर्दयता के साथ क़त्ल कर डाला। चार हज़ार की सेना बसर के मुक़ावले के लिए कूफ़ा से यमन भेजी गयी, फिर जब वह सेना पहुंची तो बसर वहां से भाग कर शाम जा पहुंचा। उस सेना ने यमन पहुंच कर गवर्नर के दो निरपराध बालकों का बदला

लेने के लिए लोगों पर बड़े अत्याचार किए। क़बीला किरजान के अनगिनत लोग इसलिए मार दिए गए कि उन्हें उन लोगों से सहानुभूति थी, जो उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों से बदले की मांग करते थे। मक्का वासियों को विवश किया गया कि वे अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के विरुद्ध बदला लेने का हलफ़ लें और मदीना वालों को विवश किया जाए कि वे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सुपुत्र हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत करें।

अरब प्रायद्वीप में विचित्र दंगा चल रहा था। लोग इसकी शिकायत कर रहे थे कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने तमाम प्रतिष्ठित पद अपने चचेरे भाइयों को दे रखे हैं। अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के एक बेटे यमन के गवर्नर थे। बसरा के लोग हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से बहुत तंग थे। लोगों ने हज़रत अली अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु के पास शिकायत भेजी कि उनकी जायज़ शिकायतें दूर की जाएं।

अमीरुल मोमिनीन ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से इसका उत्तर मांगा, वह इससे इतना बिगड़े कि उत्तर देने के बजाए पूरा राजकोष ही अपने साथ मदीना लेकर चल दिए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अपने भाई किसी कारण उनसे नाराज़ होकर अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास दमिश्क़ जा पहुंचे।

इन तमाम समस्याओं और विपदाओं ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बहुत दुखी और परेशान कर रखा था। इन परिस्थितियों में वह अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का क्या मुक़ाबला कर सकते थे? उनके पास इसके अलावा कोई रास्ता भी नहीं था कि अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से संघर्ष समाप्त कर दिया जाए। लम्बी लिखा-पढ़ी के बाद हज़रत अली और हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु में समझौता हो गया कि वे एक दूसरे के क्षेत्र में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेंगे और एक दूसरे को अपना मित्र समझेंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या

ख़ारिजी बहुत परेशान थे कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से समझौता करके हर प्रकार के गृह युद्ध पर मुहर लगा दी है। वह दिल से चाहते थे कि इस्लामी राज्य एक समिति (COUNCIL) द्वारा चले और किसी न किसी तरह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की सरकारों का अन्त हो जाए। इनमें बहुत से मक्का और मदीना जा कर निवास करने लगे। वे बड़े भावुक होकर इस्लाम की करुण स्थिति पर रोते, चीख़ते-चिल्लाते और इस बात पर ख़ेद व्यक्त करते कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों से बदला न लेकर इस्लाम को खोखला कर डाला है और अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी डेढ़ ईंट की मस्जिद अलग बना कर इस्लाम की महानता को कलंकित कर रहे हैं। स्थिति पर बहुत सोच-विचार करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचे कि कुछ ऐसे योद्धा तैयार किए जाएं जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का अन्त करके इस्लाम की बहुत बड़ी सेवा करें। उन्होंने अपनी तलवारों को तेज़ ज़हर में बुझाया, क़ुरआन पर क़सम खाई कि या तो वे अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे वरना इस कर्त्तव्य को निभाने में अपनी जान क़ुरबान कर डालेंगे। इसी प्रकार की शिकायत उन्हें हज़रत अम्र ने भी की थी। हत्या का ख़ड़यन्त्र उन के ख़िलाफ़ भी बना लिया गया था।

संयोग की बात कि हज़रत अम्र बीमार पड़ गए और निश्चित जुमा को उनकी जगह उनके नायब ने नमाज़ पढ़ाई, वह मारे गए। अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु बुरी तरह घायल हुए, लेकिन जान बच गई। कूफ़ा की स्थिति थोड़ी भिन्न थी। अमीरुमोमीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल का ज़िम्मेदार एक व्यक्ति इब्ने मुलजिम ने कूफ़ा पहुंच कर क़बीला तमीम के दो व्यक्तियों को अपने साथ गांठ लिया। ये दोनों नहरवान की लड़ाई में शामिल थे और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के घोर विरोधियों में से थे। इब्ने मुलजिम को एक युवती से प्रेम हो गया था जो बनी तमीम से थी, उसका बाप भाई और करीबी रिश्तेदार नहरवान की लड़ाई में काम आए थे। इस कारण वह ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन के घोर विरोधियों में थी। उसने इब्ने मुलजिम को

सम्बोधित करके कहा कि अगर तुम मुझसे विवाह करना चाहते हो तो मुझे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का सर ला दो। उस लड़की ने इब्ने मुलजिम का परिचय दूसरे दो क़ातिलों से कराया। उन्होंने भी अपनी तलवारों को इस ज़हर में बुझाया और जान को हथेली में रख कर मस्जिद के दरवाज़े में जा छिपे, जहां से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु गुज़रा करते थे। ज्यों ही हमेशा की तरह हज़रत अली मस्जिद के आंगन में दाख़िल हुए, इन तीनों ने एक साथ अमीरुल मोमिनीन पर आक्रमण कर दिया। एक हत्यारे ने अमीरुल मोमिनीन की भुजाओं को बुरी तरह घायल किया, दूसरे ने आपकी टांगों पर वार किया, लेकिन इब्ने मुलजिम ने अमीरुल मोमिनीन के सर पर वार करके उन्हें बुरी तरह घायल कर दिया। लोगों ने हत्यारों के एक साथी की वहीं बोटी-बोटी नोच ली, पर दूसरा भाग गया।

लोग अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके निवास स्थल पर ले गएं। उनका हत्यारा इब्ने मुलजिम उनके सामने पेश किया गया। आपने अति नम्रता से उससे बात की, लेकिन इब्ने मुलजिम ने बड़ी निर्लज्जता और ढिठाई के साथ बताया कि मैं पिछले चालीस दिन से हर दिन दुआ किया करता था कि अल्लाह! तू मेरे हाथ से उस व्यक्ति का अन्त कर दे, जिसकी मौत से इस्लाम में तमाम पैदा हो रहे फ़ित्ने और फ़साद मिट जाएं। अमीरुल मोमिनीन ने इस बात पर किसी जोश या क्रोध का प्रदर्शन न किया, बल्कि अपने बेटे हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को सम्बोधित करते हुए कहा, इब्ने मुलजिम की पूरी तरह रक्षा करो, ताकि वह कहीं भागने न पाए, पर इससे किसी प्रकार की सख़्ती न करना, अगर मैं मर जाऊं, तो उसे क़त्ल कर डालना। पर याद रखो कि उसके शरीर का अपमान न करना, क्योंकि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे मना फ़रमाया है।

उस दिन अमीरुल मोमिनीन की सुपुत्री उम्मे कुलसूम इब्ने मुलजिम की कोठरी में उसे देखने के लिए गईं और उसको सम्बोधित करके कहा, ज़ालिम! तूने मेरे बाप को नाहक़ घायल किया है। याद रखो, अल्लाह हर बात की सामर्थ्य रखता है और वह निश्चय ही उन्हें स्वस्थ कर देगा। इब्ने मुलजिम घृणा के साथ मुस्कराया और कहा, मैंने वह तलवार एक हज़ार रुपए में ख़रीदी थी और एक हज़ार रुपए उसे ज़हर में बुझाने पर ख़र्च हुए थे, इसलिए तुम्हारे बाप का स्वस्थ होना मात्र एक कल्पना है।

कुछ दिनों के बाद यह सिद्ध हो गया कि घाव गहरा और धातक है। जब लगा, शायद शिफ़ा हो जाए तो कुछ साथियों ने अमीरुल मोमिनीन से मालूम किया कि क्या आज के बाद हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को राज सिंहासन पर बिठा दिया जाए। आपने बड़ी सादगी और ईमानदारी से फ़रमाया, नहीं, मैं इसका आदेश नहीं देता, जिस तरह तुम लोगों की मर्ज़ी हो, करो इसके बाद आपने अपने बेटों हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को तलब फ़रमाया और ईश-मय, सदाचरण और सहनशीलता की नसीहत की। फिर आपने फ़रमाया, अपने सौतले भाई से हमेशा मेहरबानी के साथ पेश आना, इसके बाद आपने वसीयत लिखवाई और अपने सच्चे मालिक को स्मरण करते हुए सत्तरह रमज़ान सन् 40 हिजरी, तदनुसार 25 जनवरी सन् 661 ई० को अपने रचयिता के पास चले गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना अलैहि राजिऊन०

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली के कफ़न-दफ़न से फ़ारिग़ होने के बाद हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने हत्यारे को अपने सामने तलब किया। इब्ने मुलजिम (हत्यारा) के चेहरे पर न भय था न आंतक। उसने बेबाकी से कहा, 'मैंने काबा में अपने रचयिता की सौगन्ध खाई थी कि मैं हज़रत अली और अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हत्या करके इस्लाम के बिगाड़ को दूर करूंगा। मैं अपने इस उद्देश्य में सफल हो गया। अब अगर तुम मुझे स्वतंत्र कर दो तो मैं या तो अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का अन्त कर दूंगा, वरना अपनी इस कोशिश में जान दे दूंगा। में तुमसे क़सम खाकर वायदा करता हूं अगर मैं सफल हो गया तो वापस आकर तुम्हारी बैअत कर लूंगा।

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया, नहीं, कदापि नहीं, तुम अपनी योजना को पूरा करने से पहले जहन्नम के शोलों को भेंट चढ़ा दिए जाओगे। फिर उसकी हत्या कर दी गई।

एक आदर्श जीवन

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु 63 साल की उम्र में चार साल और नौ माह ख़लीफ़ा बने रहने के बाद शहीद किए गए। उनके युग में किसी नए क्षेत्र पर क़ब्ज़ा नहीं हुआ, अलबत्ता गृह-युद्ध का सिलसिला शुरू हुआ तो अनगिनत मुसलमान काम आए और यह सब कुछ उस भूल का नतीजा था जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों को सज़ा न देने से हुई। अगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, और अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की राय के अनुसार उन्हें फांसी की सज़ा दे देते, तो आशा की जाती थी कि लड़ाई-झगड़े और दंगा फ़साद की नौबत न आती। अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की एक ही मांग थी कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारों से बदला लिया जाए, तो मैं बैअत के लिए तैयार हूं, पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु स्थिति का सही आकलन न कर सके और स्थिति बिगड़ती गई। ऐसे ही उन्होंने मुहम्मद बिन अबू बक्र को मिस्र का गवर्नर बना कर भी एक भारी भूल की थी। उश्तुर जैसे व्यक्ति को सेना-प्रमुख बनाना भी एक ऐसा क़दम था जो अपने साथ दुष्परिणाम लाया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में खिलाफ़त के बड़े-से-बड़े मामले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के मश्विरे के बिना तै न पाते थे। वह अपने समय के श्रेष्ठ व्यक्ति थे। बड़े नम्र-हृदय और ईश-भय रखने वाले थे। हज़रत इब्ने अब्बास की तरह आप को भी ज्ञान और क़ुरआन-टीका में बड़ा दख़ल था। बहुत सी हदीसें आप से रिवायत की गई हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमाया था, मैं ज्ञान की नगरी हूं और अली रज़ियल्लाहु अन्हु उसका दरवाज़ा है।

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन की किताबत करते थे। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में छः माह क़ुरआन को क्रमागत करने में लगाया। आपको न केवल यही कि क़ुरआन कंठस्थ था, बल्कि हदीस और इस्लामी समस्याओं में भी आप दक्ष थे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम ईश-भय के लिए क़ियामत तक याद किया जाता रहेगा। आप सादा स्वभाव के थे, सत्यप्रियता आपका स्वभाव बन गया था। यद्यपि हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा आपसे पहले शहीद किए गए थे, फिर भी हज़रत अली ने अपने लिए किसी रक्षक या बाडी-गार्ड का रखना पसन्द न किया। अपने प्राणों की रक्षा के लिए उन्होंने एक पैसा भी बैतुलमाल से ख़र्च न किया। दिन व रात जन-सेवा ही में लगे रहते। अल्लाह उन्हें अपनी रहमतों से ढांपे।

इस्लामी अकीदे और उसूल और इनकी बुनियाद पर ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े इस क़िस्म के हैं कि इन पर अमल करने वाला एक इंसाफ़ पसन्द हुक्मरां (न्यायप्रिय शासक) और ख़ुदा का एक मिसाली बन्दा बन जाता है। इस्लाम के चारों ख़लीफ़ा की ज़िन्दगियां तो इनकी ज़िन्दा मिसाल हैं। इसी लिए हम इन्हें याद रखते हैं और मिसाल समझ कर इनकी तक़्लीद और पैरवी करना ज़रूरी समझते हैं। इसी जज़्बे से हम इन चारों ख़लीफ़ा की ज़िन्दगियों को पेश कर रहे हैं ताकि इन्हें नमूना बना कर हम अपनी ज़िन्दगियों को बना संवार सकें।

आपके हाथों में जो किताब है यह इस्लाम के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली ؓ की ज़िन्दगी के बारे में है जो हर पहलू से हमारे लिए मिसाल है और अपनी ज़िन्दगी को बनाने संवारने के लिए जिनकी तक़्लीद और पैरवी ज़रूरी है।

इस किताब में हज़रत अली ؓ की ज़िन्दगी के हालात आसान ज़बान में बयान किए गए हैं। आप ने लड़कपन ही में इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। आप बड़े निडर और बहादुर इंसान होने के साथ आलिम भी थे। बहुत सी हदीसें आप से रिवायत की गई हैं। हज़रत अबू बक्र ؓ और हज़रत उमर ؓ की ख़िलाफ़त के ज़माने में बड़े से बड़े मामले हज़रत अली ؓ के मश्वरे के बिना तै न पाते थे और उनकी राय को बड़ी अहमियत दी जाती थी। आपने निहायत सादा ज़िन्दगी बसर की, आप हज़रत उस्मान ؓ की शहादत के बाद ख़लीफ़ा बने और 63 साल की उम्र में चार साल नौ माह ख़िलाफ़त करने के बाद शहीद किए गए। ख़िलाफ़त के दौर का इल्म हासिल करने के लिये यह किताब बेहद मददगार है।

